हिन्दी भाषा की उत्पत्ति एवं क्रमिक विकास

डॉ आशा मीणा
सहायक आचार्य, हिंदी विभाग
मानविकी एवं भाषा संकाय
महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय
मोतिहारी, बिहार
Email: ashameena@mgcub.ac.in

हिन्दी भाषा की उत्पत्ति एवं क्रमिक विकास

- हिन्दी भारोपीय परिवार की आधुनिक काल की प्रमुख भाषाओं में से एक है।
- भारतीय आर्य भाषाओं का विकास क्रम- संस्कृत – पालि – प्राकृत – अपभ्रंश – हिन्दी एवं अन्य आधुनिक भारतीय आर्य भाषाएँ
- उत्तर भारत मे आधुनिक आर्य भाषाएँ बोली जाती हैं एवं दक्षिण भारत में द्रविड भाषाएँ बोली जाती हैं ।
- भाषा की प्रवृति नदी की धारा के समान होती है जो निरंतर प्रवाहमान रहती है ।
- भाषा को किसी प्रकार बंधन में नहीं बांधा जा सकता ।
- संस्कृत भारत की सबसे प्राचीन भाषा है जिसे आर्य भाषा या देव भाषा भी कहा जाता है ।

- हिन्दी इसी आर्य भाषा संस्कृत की उत्तराधिकारिणी मानी जाती है ।
- हिन्दी भाषा का जन्म संस्कृत से माना जाता है।
- जिसके साढ़े तीन हजार से अधिक वर्षों पुराने इतिहास को तीन भागो में विभाजित करके हिन्दी की उत्पत्ति के विकास क्रम को जाना जा सकता है-
- प्राचीन भारतीय आर्य भाषा (1500 ई.पू.– 500 ई.पू)
- मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषा (500 ई.पू. – 1000 ई.)
- आधुनिक भारतीय आर्य भाषा (1000 ई. से अब तक)

प्राचीन भारतीय आर्य भाषा (1500 ई.पू.– 500 ई.पू): वैदिक एवं लौकिक संकृत

- इस काल मे वेदों ,उपनिषदों की रचनाएँ हुई । इसके साथ ही वाल्मीकि , व्यास कालिदास और माघ आदि की संस्कृत रचनाओं का सृजन हुआ ।
- पाणिनी के व्याकरण ग्रंथ अष्टाध्यायी में वैदिक और लौकिक नामों से दो प्रकार की संस्कृत भाषा का उल्लेख पाया जाता हैं ।
- एक हजार वर्षों के इस कालखंड को संस्कृत भाषा के स्वरूप व्याकरणिक नियमों में अंतर के आधार पर निम्न भागों में बांटा गया है –

वैदिक संस्कृत
(1500 ई.पू.– 1000 ई.पू)

- मूल रूप से वेदों की रचना जिसभाषा में हुई उसे वैदिक संस्कृत कहा जाता है ।
- संस्कृत का प्राचीनतम रूप संसार की (अब तक ज्ञात) प्रथम कृति ऋग्वेद में प्राप्त होता है ।
- ब्राह्मण ग्रन्थों और उपनिषदों की रचना भी वैदिक संस्कृत में हुई ,हालांकि इनकी भाषा में पर्याप्त अंतर पाया जाता हैं।

लौकिक संस्कृत
(1000 ई.पू.– 500 ई.पू)

- दर्शन ग्रन्थों के अतिरिक्त संस्कृत का उपयोग साहित्य में भी हुआ । इसे लौकिक संस्कृत कहते है
- वाल्मीकि, व्यास, कालिदास और माघ आदि की रचनाएँ इसी में हैं।
- वेदों के अध्ययन से स्पष्ट रूप से देखा जा सकता हैं की कालांतर में वैदिक संस्कृत के स्वरूप में भी बदलाव आता चला गया ।
- पाणिनी और कात्यायन ने संस्कृत भाषा के बिगड़ते स्वरूप का संस्कार किया और इसे व्याकरणबद्ध किया
- पाणिनी के नियमीकरण के बाद की संस्कृत ,वैदिक संस्कृत से काफ़ी भिन्न हैं जिसे लौकिक या क्लासिकल संस्कृत कहा गया ।

- रामायण ,महाभारत ,नाटक ,व्याकरण आदि ग्रंथ लौकिक संस्कृत में ही लिखे गए हैं ।
- हिन्दी का प्राचीनतम रूप संस्कृत ही है ।
- संस्कृत काल के अंतिम पड़ाव तक आते – आते मानक अथवा परिनिष्ठित भाषा तो एक ही रही , किन्तु क्षेत्रीय स्तर पर तीन क्षेत्रीय बोलियाँ विकसित हुई –

  - पश्चिमोत्तरीय बोलियाँ
  - मध्य देशीय बोलियाँ
  - पूर्वी बोलियाँ

मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषा (500 ई.पू. – 1000 ई.): पाली, प्राकृत एवं अपभ्रंश

- मूलत: इस काल में लोक भाषा का विकास हुआ। इस समय भाषा का जो रूप सामने आया उसे प्राकृत कहा गया ।
- वैदिक और लौकिक संस्कृत के काल में बोलचाल की जो भाषा दबी पड़ी हुई थी, उसने अनुकूल समय पाकर सिर उठाया और जिसका प्राकृतिक विकास 'प्राकृत' के रूप मे हुआ ।
- प्राकृत के वररुचि आदि वैयाकरणों ने प्राकृत भाषाओं की प्रकृति संस्कृत को मानकर उससे प्राकृत शब्द की व्युत्पत्ति की है ।
- "प्रकृति : संस्कृतं, तत्रभवं तत आगतं वा प्राकृतम्"।

- मध्य काल में यही प्राकृत भाषा तीन रूपों में विकसित हुई –
  - पालि (500 ई.पू.– 1 ई.)
  - प्राकृत (1 ई.– 500 ई.)
  - अपभ्रंश (500 ई. - 1000 ई.)

पालि
(500 ई.पू. – 1 ई.)

- संस्कृत कालीन बोलचाल की भाषा विकसित होते-होते 500 ई.पू. के बाद काफी बादल गई जिसे पालि नाम दिया गया ।
- इस भाषा को सबसे पुरानी प्राकृत और भारत की प्रथम देश भाषा कहा जाता है ।
- बौद्ध ग्रन्थों की 'पालि भाषा' में बोचाल की भाषा का शिष्ट और मानक रूप प्राप्त होता है ।
- इस काल में आते –आते क्षेत्रीय बोलियों की संख्या तीन से बढ़कर चार हो गई –

i. पश्चिमोत्तरीय बोलियाँ
ii. मध्य देशीय बोलियाँ
iii. पूर्वी बोलियाँ
iv. दक्षिणी बोलियाँ

प्राकृत
(1 ई. – 500 ई.)

- पहली ई. तक आते –आते इस भाषा में परिवर्तन हुए जिसे प्राकृत की संज्ञा दी गई ।
- सामान्य मतानुसार जो भाषा असंस्कृत थी और बोलचाल की आम भाषा थी तथा सहज ही समझी जाती थी , प्राकृत भाषा कहलायी।
- इस काल मे क्षेत्रीय बोलियों की संख्या कई थी ,जिसमे शौरसेनी,पैशाची, ब्राचड़, महाराष्ट्री, मागधी और अर्धमागधी आदि प्रमुख हैं ।
- भाषा विज्ञानियों के द्वारा प्राकृत के पाँच रूप स्वीकार किए गए हैं –

i. शौरसेनी (मथुरा के आस –पास मध्य देश की भाषा जिस पर संस्कृत का प्रभाव)
ii. पैशाची (सिंध)
iii. महाराष्ट्री (विदर्भ महाराष्ट्र)
iv. मागधी (मगध)
v. अर्धमागधी (कोशल प्रदेश की भाषा, जैन साहित्य में प्रयुक्त)

अपभ्रंश
(500 ई. - 1000 ई.)

- भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से अपभ्रंश भारतीय आर्य भाषा के मध्य काल की अंतिम अवस्था है जो प्राकृत और आधुनिक भाषाओं के बीच को स्थिति है ।
- समय के परिवर्तन के साथ प्राकृत भाषा में भी परिवर्तन हुआ इसी परिवर्तन के कारण आचार्यों ने इस भाषा को 'अपभ्रंश' नाम दिया । आचार्यों ने अपभ्रंश शब्द का अर्थ बताया - बिगड़ी हुई भाषा ।
- प्राकृत भाषाओं की तरह अपभ्रंश के परिनिष्ठित रूप का विकास भी 'मर्ध्य देश' में ही हुआ था ।
- डॉ. भोलानाथ तिवारी ने अपभ्रंश के सात भेद स्वीकार किए हैं –

i. शौरसेनी – पश्चिमी हिन्दी , राजस्थानी और गुजराती
ii. पैशाची – लहंदा और पंजाबी
iii. ब्राचड़- सिंधी
iv. महाराष्ट्री – मराठी
v. मागधी – बिहारी , बंगला , उड़िया एवं असमिया
vi. अर्धमागधी – पूर्वी हिन्दी

- अत : कहा जा सकता है कि हिन्दी भाषा का विकास अपभ्रंश के शौरसेनी, मागधी और अर्धमागधी रूपों से हुआ ।

आधुनिक भारतीय आर्य भाषा (1000 ई. से अब तक)

- 1100 ई॰ तक आते आते अपभ्रंश का काल समाप्त हो गया और आधुनिक भाषाओं का युग आरंभ हुआ ।
- जैसा कि पहले ही बताया गया है कि अपभ्रंश के विभिन्न क्षेत्रीय स्वरूपों से आधुनिक भारतीय भाषाओं /उप भाषाओं यथा पश्चिमी हिन्दी, राजस्थानी, गुजराती, लहंदा, पंजाबी, सिंधी, पहाड़ी, मराठी, बिहारी, बंगला, उड़िया, असमिया और पूर्वी हिन्दी आदि का जन्म हुआ ।
- आगे चलकर पश्चिमी हिन्दी, राजस्थानी, बिहारी, पूर्वी हिन्दी और पहाड़ी पाँच उप भाषाओं तथा इनसे विकसित कई क्षेत्रीय बोलियों जैसे ब्रज भाषा, खड़ी बोली, जयपुरी, भोजपुरी, अवधि और गढ़वाली आदि को समग्र रूप से हिन्दी कहा जाता है ।
- कालांतर में खड़ी बोली ही अधिक विकसित होकर अपने मानक और परिनिष्ठित रूप में वर्तमान और बहु प्रचलित मानक हिन्दी भाषा के रूप में सामने आयी।

निष्कर्ष

- अपभ्रंश और आधुनिक हिन्दी के बीच कि कड़ी के रूप में भाषा का एक और रूप प्राप्त होता है।
- जिसे विद्वानों का एक वर्ग अवहट्ट कहता है वहीं अधिकांश विद्वान इसे अपभ्रंश ही मानते है ।
- अवहट्ट नाम स्पष्ट रूप से विद्यापति कि 'कीर्तिलता' में आता है –

  "देसिल बयना सब जन मिट्ठा ।
  ते तइसन जुम्पओ अवहट्ट।"

- अवहट्ट को अपभ्रंश से भिन्न मानने वाले विद्वान इसे हिन्दी का ही पूर्व रूप मानते है ।
- स्पष्टत : अवहट्ट को हिन्दी और अपभ्रंश को जोड़ने वाली कड़ी के रूप में स्वीकार किया जा सकता है ।

धन्यवाद